International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

आधुनिक शासन में गाँधीवादी नैतिकता, अहिंसा एवं सत्याग्रह सिद्धांतों की प्रासंगिकता

प्रो. गोपाल प्रसाद[1], जितेंद्र प्रजापति[2], डा. समरेन्द्र बहादुर शर्मा[3]

[1]प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर
[2]शोध छात्र, राजनीति विज्ञान विभाग, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर
[3]सहयुक्त आचार्य, राजनीति विज्ञान विभाग, बी0 आर0 डी0 पी0 जी0 कालेज, देवरिया

सारांश

आज हम एक बार फिर आधुनिक शासन व्यवस्था में गाँधीवादी नैतिकता, अहिंसा एवं सत्याग्रह सिद्धांतों की प्रासंगिकता को अनुभव करने लगे है। आज की भ्रष्ट शासन व्यवस्था, मूल्यहीनता, गैर-जवाबदेही एवं अपारदर्शिता ने हमें हर तरह से निराश किया है। गाँधी चिंतन के अनुकरण से हम राष्ट्रीय जीवन में व्याप्त हिंसा, घृणा, अविश्वास और भ्रष्टाचार पर टिकी आधुनिक शासन व्यवस्था के विभिन्न दोषों को सरलता से दूर कर सकते है । शासन का संबंध एक देश के सभी स्तरों पर मामलों का प्रभावकारी प्रबंधन से है, यह क्षेत्रीय अखंडता, स्वतन्त्रता, सुशासन, सर्वांगीण विकास जनता की सुरक्षा और सम्पूर्ण जनकल्याण पर बल देता है और लोक में संवेदना का भाव संचार करता है। महात्मा गाँधी का उद्देश्य किसी नए दर्शन का विकास करना नहीं था। किन्तु ऐसा कोई पहलू नहीं जिसपर उन्होने विचार नहीं किया हो, चाहे वह राजनीतिक पहलू हो या सामाजिक, धार्मिक हो या आर्थिक, इत्यादि विषयों पर विचार मिलता है। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि इनके सभी पहलुओं का आधार एक ही है वह है नैतिकता एवं अहिंसा। गाँधी जी के सत्याग्रह की खूबी यही है कि व्यक्ति को इसकी कहीं बाहर जाकर खोज नहीं करनी पड़ती वह उसके सामने स्वयं आ खड़ा होता है। स्वयं सत्याग्रह के सिद्धान्त में ही यह गुण अंतर्निहित है। आधुनिक शासन व्यवस्था में पूर्ण जवाबदेही, पारदर्शिता एवं सुशासन तभी संभव है जब हम गाँधी के नैतिकता, अहिंसा और सत्याग्रह सिद्धांतो को अंगीकार करें।

मुख्य शब्द- आधुनिक शासन, नैतिकता, अहिंसा, सत्याग्रह, जवाबदेही, पारदर्शिता, ईमानदारी, मूल्यहीनता, सुशासन

प्रस्तावना -

शासन से अभिप्राय है कि जनता को शासित करने या सार्वजनिक मामलों को संचालित करने के लिए प्राधिकार का प्रयोग करने की प्रक्रिया है। शासन का अर्थ कानून और आदेश के संचालन से कहीं अधिक है। आधुनिक शासन प्रणाली का अर्थ एक ऐसी शासन प्रणाली से है जो आधुनिक समय की अवधारणाओं और मानकों को ध्यान में रखकर स्थापित और संचालित हो। आधुनिक शासन में जनता की भागीदारी महत्वपूर्ण होती है। इसे चुनावो के माध्यम से सुनिश्चित किया जाता है जहां पर लोग अपने प्रतिनिधियों का चुनाव करते हैं। आधुनिक शासन व्यवस्था में कानून का पालन और उसका सम्मान सर्वोपरि होता है जहां पर न्यायपालिका स्वतंत्र और निष्पक्ष होती है। आधुनिक शासन की पहचान है कि शासन के सभी कार्यों में पारदर्शिता और जनता के प्रति जवाबदेह होते हैं। आधुनिक शासन मानवाधिकारों और नागरिक स्वतंत्रताओ की सुरक्षा करता है जिसमें अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, धर्म की स्वतंत्रता और समानता जैसे मूलभूत अधिकार शामिल होते हैं। आधुनिक शासन में प्रौद्योगिकी का उपयोग प्रशासनिक कार्यों में अधिक प्रभावी होता है। जिसमें सभी वर्गों के बीच समानता और न्याय सुनिश्चित करना आधुनिक शासन का एक प्रमुख उद्देश्य है। परन्तु वर्तमान परिदृश्य में शासन व्यवस्था में मूल्यहीनता के अनेक प्रश्न खड़े हो रहे है। शासन में गैर-जवाबदेही, अपारदर्शिता, बेईमानी बढ़ता ही जा रहा है और यह सब नैतिकता के पतन के कारण हो रहा है। जिससे जातीय उन्माद, हिंसा, सांस्कृतिक अवमूल्यन, चरित्रहीनता, सिद्धान्तविहीन एवं वैचारिक अपरिपक्वता ने राजनीति एवं शासन व्यवस्था को चिंताजनक बना दिया है। राजनीति का सम्पूर्ण परिदृश्य विकृत एवं भ्रष्ट होता जा रहा है, बढ़ती मूल्यहीनता के कारण अनेक अंतर्विरोध, विदुपताएँ एवं विसंगतियाँ तेजी से बढ़ रही है। कोलाहल एवं कलह से भरी शासन व्यवस्था में सामाजिक एवं राजनीतिक परिवर्तन उत्कृष्ठ नीति, नेतृत्व के लिए गाँधीवादी नैतिकता, अहिंसा एवं सत्याग्रह के सिद्धांतों को आवश्यक रूप से अपनाना अपेक्षित होता है।

नैतिकता

महात्मा गाँधी नैतिक समग्रतावादी थे जिन्होंने अपने आधारभूत नैतिक सिद्धांतों से कोई समझौता नहीं किया। गाँधी जी का मानना था कि जिससे हम अच्छे विचारों में प्रवृत हो सकते है वह हमारी नैतिकता का परिणाम माना जाएगा। नीति मार्ग हमें यह बतलाती है कि दुनियाँ कैसी होनी चाहिए यदि हमें पूर्ण बनना है तो हमें आज से हर तरह के कष्ट उठाकर नीति का पालन करना चाहिए और उन्होंने आजीवन यही किया। महात्मा गाँधी ने अपनी नैतिकता के प्रकाश से सिर्फ भारत ही नहीं सम्पूर्ण विश्व को अवलोकित किया। वे हिंसा, रक्तपात, असत्य, धोखेबाज़ी की कीमत पर आजादी नहीं चाहते थे क्योंकि वे जानते थे कि नैतिकताविहीन आज़ादी का कोई अर्थ या औचित्य नहीं होता है। उन्होंने सिर्फ हमें राष्ट्रीय

स्वतंत्रता ही नहीं दिलाई बल्कि हमें एक वातावरण भी दिया जिसमें हम अपने नैतिक गुणों का विकास कर मनुष्यता को पा सके।

ऐसा लगता है जैसे महात्मा गाँधी का शरीर हाड़-मांस से निर्मित न होकर नैतिकता के अवयवों से निर्मित था। गाँधी जी के अनुसार धर्म हमारी सभी गतिविधियों को नैतिक आधार प्रदान करता है। यदि नैतिक तत्व का अभाव हो तो मानव जीवन निरर्थक हो जाता है। गाँधी जी के लिए सत्य और नैतिकता से बढ़कर कोई धर्म नहीं है। वह ऐसी किसी भी अनुचित धार्मिक भावना को स्वीकार नहीं करते जो नैतिक न हो। उनका मानना है कि जैसे ही हम नैतिक आधार खो देते हैं, हम धार्मिक होना बंद कर देते हैं। नैतिकता धर्म के बिना संभव है लेकिन धर्म नैतिकता के विकास में बहुत बड़ा योगदान देता है। गाँधी कहते हैं, सच्चा धर्म और सच्ची नैतिकता एक-दूसरे से अविभाज्य रूप से जुड़े हुए हैं। नैतिकता के लिए धर्म वही है जो मिट्टी में बोए गए बीज के लिए पानी है।

अहिंसा

महात्मा गाँधी के अहिंसा के मार्ग का पहला कदम यह है कि हम अपने जीवन में परस्पर सच्चाई, विनम्रता, सहिष्णुता, प्रेममय दयालुता का व्यवहार करे। अहिंसा को जिस स्थूल रूप में आज हम देखते है अहिंसा वैसी स्थूल नहीं है। किसी को न मारे यह तो अहिंसा है ही किन्तु कुविचार मात्र हिंसा है, उतावली हिंसा है, मिथ्या भाषण हिंसा है, द्वेष हिंसा है, किसी के अहित कि कामना हिंसा है। जिसकी जरूरत जगत को है उसपर अधिकार कर लेना भी हिंसा है। अहिंसा कोई यांत्रिक क्रिया नहीं है। यह हृदय का सर्वोत्तम गुण है और प्रयत्नपूर्वक पा लेने पर ऐसा मालूम होता है कि वह स्वाभाविक गुण है। सचमुच वह वैसा ही है और प्राप्त हो जाने पर व्यक्ति को आश्चर्य होता है कि उसे पाने में उसे किसी प्रकार का कष्ट क्यों उठाना पड़ा। हमारे भीतर का पशु कहता है कि प्रहार के बदले प्रहार से बढ़कर स्वाभाविक और क्या है? हमारे अंदर बैठा हुआ मनुष्य कहता है कि प्रहार के बदले मारने वाले को क्षमा करने से बढ़कर अधिक स्वाभाविक और अधिक मानवता और क्या है? गाँधी जी कहते है की मैं स्वयं को व्यावहारिक आदर्शवादी मानता हूँ अहिंसा का धर्म केवल ऋषियों एवं संतों के लिए नहीं है। यह सामान्य लोगों के लिए भी है। महात्मा गाँधी की अहिंसा इन बात की इजाजत नहीं देता कि खतरा सामने देखकर अपने प्रियजनों को असुरक्षित छोड़कर खुद भाग जाओ। हिंसा और कायरतापूर्वक पलायन में गाँधी जी हिंसा को तरजीह देते थे। जिस प्रकार किसी अंधे आदमी को सुंदर दृश्य का आनंद के लिए प्रेरित नहीं किया जा सकता उसी प्रकार किसी कायर को अहिंसा का पाठ नहीं पढ़ाया जा सकता। हिंसा का जवाब केवल अहिंसा है। यह एक प्राचीन सुस्थापित सत्य है। हिंसा का हथियार भले ही अणु बम हो सच्ची अहिंसा के सामने नाकाम है। जो लोग आचरण के बजाएँ आचरणकर्ता को नष्ट करना चाहते है वो यह सोचते है की आचरणकर्ता के साथ आचरण भी मर जाएगा, तो ऐसा नही हो सकता है।

सत्याग्रह

महात्मा गाँधी का स्पष्ट मानना था कि अहिंसा पर अडिग व्यक्ति ही नैतिकता और सत्याग्रह का पालन कर सकता है। वर्तमान समय में अन्याय के विरोध का तरीका हिंसात्मक दृष्टि, तोडफोड, आगजनी आदि के रूप में देखा जाता है। जिसका परिणाम भी विनाशक एवं द्वेष पैदा करने वाले होते है। किसी भी राष्ट्र का कोई भी आंतरिक संगठन या बाहरी संगठन निरंतर अपनी मांगो की पूर्ति के लिए सरकार पर दबाव डालते है एवं उनके मांगों कि पूर्ति नहीं होने कि स्थिति में हिंसात्मक साधनों का प्रयोग आमबात हो गई है। यह स्थिति शासनतंत्र के लिए भी परेशानी पैदा करता है और स्वयं व्यक्ति या समुदाय की मांग पूरी भी हो जाए यह भी सुनिश्चित नहीं है। गाँधी जी के सत्याग्रह की खूबी यही है कि व्यक्ति को इसकी कहीं बाहर जाकर खोज नहीं करनी पड़ती है वह उसके सामने स्वयं आ खड़ा होता है। स्वयं सत्याग्रह के सिद्धान्त में ही यह गुण अंतर्निहित है। गाँधी जी ने कहा था सत्याग्रह पर सामना करते हुए मुझे शुरू के चरणों में ही यह लग गया था कि सत्य के अनुकरण में विरोधी पर हिंसक वार करने की अनुमति नहीं है बल्कि उसे धैर्य तथा सहानुभूति से अपनी गलती को दूर करने के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए। किसी भी स्थिति में आत्मा के बल का आश्रय किसी अन्य व्यक्ति को पीड़ा नहीं पहुंचाता है इसीलिए जब भी इसका दुरुपयोग किया जाता है तो केवल इसके प्रयोगकर्ता को हानी पहुंचाता है उसको कभी नही जिसके विरोध इसका प्रयोग किया गया है। सद्गुण के भांति यह अपना स्वयं पुरस्कार है। आत्मा के बल के इस्तेमाल में असफलता की कोई गुंजाइश ही नहीं है। सत्याग्रही विवेकपूर्वक तथा स्वेच्छा से समाज के नियमों का पालन करता हैं क्योंकि वह इसे अपना पवित्र कर्तव्य मानता है। समाज के नियमों का पालन करने से ही वह ऐसी स्थिति में आ पाता है कि यह निर्णय कर सके कि कौन से नियम अच्छे तथा न्यायोचित है तथा कौन से अनुचित तथा अन्यायपूर्ण। चूंकि सत्याग्रह सीधी कार्यवाही का सबसे शक्तिशाली रूप है। इसलिए सत्याग्रही सत्याग्रह शुरू करने से पहले बाकी सब तरीकों पर अमल करके देख लेता है तदनुसार वह पहले संबन्धित प्राधिकारी से संपर्क करेगा और उसे जारी रखेगा, फिर जनमत का ध्यान आकर्षित करेगा, लोगों को संबन्धित समस्या से अवगत कराएगा जो उसकी बात सुनना चाहते है उनके समक्ष शांतिपूर्वक अपना पक्ष प्रस्तुत करेगा और जब सभी उपाय चूक जाएंगे तब सत्याग्रह कि शरण लेगा लेकिन एक अंतर्वाणी की आदेश सुन लेने के बाद यदि वह सत्याग्रह शुरू कर देता है तो फिर किसी भी हालत में उससे पीछे नहीं हटेगा। जिस प्रकार अनचाहे युद्ध से सिपाही को प्रशिक्षण मिल जाता है उसी प्रकार दमन सत्याग्रही प्रशिक्षित होता है। सत्याग्रही को दमन का पता लगाना चाहिए। वे पाएंगे की दमित व्यक्ति किंचित शक्ति प्रदर्शन से ही सरलतापूर्वक डर जाते है और पीड़ा भोग तथा आत्म बलिदान के लिए तैयार नहीं होते यही सत्याग्रह के लिए प्रथम पाठ पढ़ने के समय होता है।

निष्कर्ष

महात्मा गाँधी का मानना था कि शासन का आधार केवल कानून या आदेश से संचालित नहीं होना चाहिए उसमें नैतिकता के बिना चरित्रहीनता, सिद्धांतहीनता, मूल्यहीनता, गैर-जवाबदेही, अपारदर्शिता एवं बेईमानी का प्रभाव बढ़ेगा। नैतिकता व्यक्ति को ईमानदार कर्तव्यनिष्ठ बनाती है। अहिंसा का सद्गुण केवल व्यक्तिगत सद्गुण नहीं बल्कि सामाजिक सद्गुण है इसमें संदेह नहीं है कि पारस्परिक व्यवहार में समाज प्रायः अहिंसा की अभिव्यक्ति से ही संचालित होता है। अतः इसका बड़े पैमाने पर अंतरराष्ट्रीय स्तर पर विकास किया जाना चाहिए जिस प्रकार पृथ्वी गुरुत्वाकर्षण के सिद्धान्त से बंधी हुई है उसी प्रकार समाज अहिंसा के सूत्र में बंधा है। सत्याग्रह में कपट मिथ्या तत्व या किसी प्रकार के असत्य का कोई स्थान नहीं है। महात्मा गाँधी के सत्याग्रह की सिद्धांत को समयानुकुल बनाने का दायित्व वर्तमान पीढ़ी पर है साथ ही साथ आने वाली पीढ़ी का यह भी दायित्व है कि वे इन सभी सिद्धान्तो को परिस्थितिनुकुल बनाए।

संदर्भ ग्रंथ सूची-

1. गाँधी की नैतिकता- सुजाता- सर्व सेवा संघ वाराणसी 2012, पृष्ठ - vii
2. महात्मा गाँधी के विचार, आर॰ के प्रभु एवं यू॰ आर॰ राव॰, नेशनल बुक ट्रस्ट इंडिया 1994,
3. यंग इंडिया, 11-08-1920, पृष्ठ संख्या - 3
4. हरिजन, 5-09-1936, पृष्ठ संख्या- 236
5. हरिजन, 2-04-1938, पृष्ठ संख्या- 64
6. यंग इंडिया, 28-05-1924, पृष्ठ संख्या- 178
7. हिन्द स्वराज, गाँधी जी, अनुवादक अमृतलाल ठाकुरदास नाणावटी, नवजीवन मुद्रालय, अहमदाबाद
8. मेरे सपनों का भारत, गाँधी जी संग्राहक, आर. के. प्रभु, नवजीवन मुद्रालय, अहमदाबाद
9. सत्य के प्रयोग अथवा आत्मकथा , मोहनदास करमचंद्र गाँधी ,अनुवाद काशीनाथ त्रिवेदी , नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद
10. www.mkgandhi.orgs
11. www.wikipedia.org /सत्याग्रह/अहिंसा/नैतिकता